ॐ

अथाध्यात्मं यदेतद्गच्छतीव च मनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णँ संकल्पः ।।५।।

इस मन्त्र में आत्मा के सन्दर्भ में ब्रह्म का दृष्टान्त दिया गया है। जिस त्वरित गति से मन इच्छा करता है अथवा ब्रह्म के विषय में चिन्तन करता है, उतनी ही त्वरित गति से ब्रह्म प्रकट और अप्रकट होते हैं।

प्रथम आवरण पृष्ठ

आपके विचारों से ही आपका चरित्र बनता है। आप जैसा विचार करेंगे, वैसा ही आप बनेंगे। यदि आप सद्विचारों को प्रश्रय देते हैं, तो आप सदाचारी व्यक्ति के रूप में जन्म ग्रहण करेंगे और यदि दुर्विचारों को प्रश्रय देते हैं, तो आप दुराचारी व्यक्ति के रूप में जन्म लेंगे। यह प्रकृति का अकाट्य नियम है।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन

केवल ईश्वर ही सत्य है। यह संसार एक सापेक्ष सत्य है। संसार ईश्वर पर पूर्णतः निर्भर है। मानव ईश्वर का ही प्रतिरूप है; परन्तु उसके अमर पद का उत्तराधिकारी बनने हेतु उसे (मानव को) अपने अन्दर के पशुत्व पर विजय प्राप्त करनी होगी। अपने निम्नस्तरीय स्वभाव पर विजय प्राप्त करने का प्रयास ही साधना कहलाता है। मानव-जीवन का एकमात्र परम लक्ष्य हैह्वह्वब्रह्म का साक्षात्कार तथा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। यह है दिव्य जीवन-सम्बन्धी उपदेशों का सारतत्त्व।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवाह करें अथवा न करें ३

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

पति तथा पत्नी के मध्य प्रेम का स्वरूप

पति तथा पत्नी के मध्य का प्रेम मुख्यतः शारीरिक, स्वार्थी तथा दम्भी होता है। यह स्थिर नहीं होता है। यह क्षणभंगुर तथा परिवर्तनशील होता है। यह शारीरिक काम-वासना मात्र है। यह यौनोपराग है। इसमें निम्न संवेगों का पुट होता है। यह पाशविक प्रकृति का होता है। यह सीमित है। किन्तु दिव्य प्रेम असीम, शुद्ध, सर्वव्यापी तथा नित्य-स्थायी होता है। यहाँ विवाह-विच्छेद का प्रश्न नहीं उठता।

अधिसंख्यक पति तथा पत्नी के बीच में वास्तव में आन्तरिक मेल नहीं होता है। सावित्री तथा सत्यवान्, अत्रि तथा अनसूया इन दिनों बहुत ही विरले होते हैं। क्योंकि पति तथा पत्नी केवल स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से बाह्यतः ही संयुक्त होते हैं; अतः उनमें मुस्कान तथा बाह्य प्रेम का कुछ दिखावा मात्र होता है। यह सब दिखावा मात्र है।

क्योंकि उनके विश्वास की गहनतम अनुभूतियों में वास्तविक एकता नहीं होती, अतः प्रत्येक घर में सदा ही किसी-न-किसी प्रकार का वैमनस्य तथा अनबन, वक्र चेहरे तथा तीक्ष्ण शब्द होते रहते हैं। यदि पति अपनी पत्नी को चलचित्र-भवन नहीं ले जाता, तब घर में झगड़ा चल पड़ता है। क्या आप इसे सच्चा प्रेम कह सकते हैं! यह स्वार्थपरक व्यापारिक कार्य है। काम-वासना के कारण लोग अपनी सत्यनिष्ठा, स्वतन्त्रता तथा गरिमा खो बैठे हैं। वे स्त्रियों के दास बन गये हैं। आप क्या ही दयनीय दृश्य देख रहे हैं! कुंजी पत्नी के पास है और दो रुपये के लिए भी पति को उसके सामने अपना हाथ पसारना पड़ता है। तथापि भ्रान्ति तथा कामोन्मादवश पति कहता है—"मेरे एक प्रेमपात्र स्नेही पत्नी है। वह वास्तव में मीरा है। वह वस्तुतः पूजनीय है।"

स्वार्थपरक प्रेम में प्रेमी तथा प्रेयसी के मध्य सच्चा सुख नहीं हो सकता है। पति के मरणासन्न होने पर पत्नी अधिकोष-लेखा-पुस्तिका (बैंक पासबुक) ले कर चुपके से अपने मायके चली जाती है। पति की कुछ दिनों के लिए नौकरी छूट जाती है, तो पत्नी मुँह बनाती है, कठोर शब्द बोलती है तथा प्रेमपूर्वक उसकी उचित सेवा नहीं करती है। यह स्वार्थी प्रेम है। उनके हृदय-अन्तर्भाग में सच्चा स्नेह नहीं होता है। अतः घर में सदा लड़ाई-झगड़ा तथा अशान्ति रहती है। पति तथा पत्नी वास्तव में एक नहीं हुए हैं। वे नीरस तथा खिन्न जीवन को खींचते हुए येन-केन-प्रकारेण निभाते रहते हैं।

काम-वासना किसी तरह भी प्रेम नहीं है। यह पशु-प्रवृत्ति है। यह शारीरिक प्रेम है। यह पाशविक स्वरूप वाला है। यह स्थानान्तरित होता रहता है। यदि पत्नी किसी असाध्य रोग के कारण अपना सौन्दर्य खो बैठती है, तो पति उससे विवाह-विच्छेद

कर द्वितीय पत्नी से विवाह कर लेता है। इस संसार में यह परिस्थिति जारी रहती है।

पति अपनी पत्नी से पत्नी के लिए प्रेम नहीं करता, वरन् अपने स्वयं के लिए करता है। वह स्वार्थी है। वह पत्नी से विषय-सुख की आशा करता है। यदि कुष्ठरोग अथवा चेचक उसके सौन्दर्य को नष्ट कर देता है, तो उसके पति का प्रेम समाप्त हो जाता है। जब पत्नी की मृत्यु हो जाती है, तो पति शोकमग्न हो जाता है। ऐसा वह अपनी स्नेही जीवन-संगिनी की क्षति के कारण नहीं, वरन् इसलिए करता है कि वह अब यौन-सुख प्राप्त नहीं कर सकता है।

जब आपकी पत्नी युवती तथा सुन्दर होती है, तब आप उसके घुँघराले बाल, गुलाबी कपोलों, मनोहर नासिका, चमकीली त्वचा तथा रुपहले दाँतों की प्रशंसा करते हैं। जब वह किसी चिरकालिक असाध्य व्याधि के कारण अपना सौन्दर्य खो देती है, तब आपके लिए उसमें आकर्षण नहीं रहता। आप द्वितीय पत्नी से विवाह कर लेते हैं। यदि आपने अपनी प्रथम पत्नी से आत्म-भाव से प्रेम किया होता, यदि आपमें यह व्यापक समझ होती कि आप तथा आपकी पत्नी में एक ही आत्मा है, तब उसके प्रति आपका प्रेम शुद्ध, निःस्वार्थ, चिरस्थायी, निर्विकार तथा अपरिवर्तनशील होता। जैसे आप पुरानी मिसरी तथा पुराने चावल को अधिक पसन्द करते हैं, वैसे ही आप अपनी पत्नी से, जब वह वृद्ध हो जाती है, अधिकाधिक प्रेम करेंगे, क्योंकि ज्ञान के द्वारा आपमें आत्म-भाव आ गया है। ज्ञान ही प्रेम को और अधिक प्रगाढ़ करेगा तथा उसे चिरस्थायी बनायेगा।

शारीरिक प्रेम पशु-धर्म है। शरीर अथवा त्वचा के प्रति प्रेम राग है। यह उन्नत तथा परिष्कृत राग है। यह स्थूल तथा वैषयिक है। शरीर के प्रति राग शुद्ध प्रेम अथवा सच्चा प्रेम नहीं है। यह अज्ञानजात मोह ही है। आप इस राग के कारण ही पाप कर्म करते हैं तथा अपनी आत्मा का हनन करते हैं।

वेश्याएँ भी अपने ग्राहकों के प्रति कुछ समय तक प्रचुर प्रेम, मधुर मुस्कान प्रदर्शित करती तथा मधुमय शब्द बोलती हैं। ऐसा वे जब तक रुपया ऐंठ सकती हैं, तभी तक करती हैं। जरा मुझे स्पष्ट रूप से बतायें कि क्या आप इसे प्रेम तथा सच्चा सुख कह सकते हैं ? इसमें धूर्तता, व्यवहारकुशलता, कुटिलता तथा मिथ्याचार है। इस प्रेम में आत्म-त्याग का किंचित् अंश भी नहीं है।

(अनूदित)

मन बड़ा चंचल है। वह एक पल भी कहीं रुकता नहीं, बैठता नहीं, पलक झपकते ही सैकड़ों मील की सैर कर आता है। जहाँ हम रहते हैं, हमारा मन वहाँ से दूर-दूर रहता है। यदि हम अपने इस मन को सदा अपने पास टिकाये रख सकें॥॥जहाँ हम बैठे हैं, जहाँ हम रहते हैं तथा जहाँ हम काम करते हैं वहाँ पर उसे बाँध कर अपने निकट रखने का अभ्यास कर लें, तो निश्चित रूप से हम आत्मिक शान्ति का अनुभव कर सकेंगे।

स्वामी चिदानन्द

मोक्षदायी कर्म

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

इस संसार के लाखों-करोड़ों लोगों में से अधिकांश किसी-न-किसी कर्म में संलग्न हैं। अधिकतर तो कार्य करने की अनिवार्यता के कारण काम कर रहे हैं; उनकी पत्नी है, बच्चे हैं, घर में बूढ़ी माँ हैं! कुछ इसलिए कार्यरत हैं कि उन्हें ऐसा करने से सन्तोष मिलता है; वह संसार की अग्रगामी गतिविधि में अपना सहयोग दे रहे हैं। कुछ कार्य करने को इसलिए विवश हैं; क्योंकि उनके स्वभाव में ही चंचलता, अस्थिरता और व्याकुलता है। कुछ मदर टेरेसा की भाँति इसलिए अथक कार्य में संलग्न हैं; क्योंकि वह अन्य दु:खियों के कष्ट को सहन नहीं कर पाते। और कुछ गिन-चुने आनन्दमयी माँ जैसे व्यक्ति भी हैं जो निरन्तर कार्यरत हैंह्वह्वकेवल दूसरों को प्रसन्नता और सुख प्रदान करने के लिए।

किन्तु कुछ लोग अपने आध्यात्मिक विकास के साधन के रूप में कार्य करते हैं। वह जानते हैं कि उन्हें अपनी कमियों को दूर करने की आवश्यकता है, उन्हें अपने व्यक्तित्व को निखारना है, दोषों और त्रुटियों को हटाना है और गलतियों को सुधारना है, सही प्रेरणा उत्पन्न करनी है और धीरे-धीरे व्यावहारिक तथा विकासशील कर्मयोग के क्षेत्र में संलग्न हो कर धीरे-धीरे इच्छाओं और स्वार्थपरताओं से ऊपर उठना है। इन समस्त कामों में उनकी अन्तिम इच्छा और उद्देश्य केवल भगवान् होते हैं, न स्वयं अपने-आपके और न ही संसार की किसी वस्तु के लिए उनमें इच्छा होती है। वस्तु-पदार्थों के इस संसार के साथ उनके काम का कोई भी सीधा सम्बन्ध नहीं होता। अदृश्य रूप से उनका काम परम सत्ता के साथ सम्बन्धित होता है।

उनका कर्म भिन्न प्रकार का है। यह सांसारिक नहीं है, यह प्रपंच से सम्बन्धित नहीं है। इसके पीछे कोई इच्छा निहित नहीं है, प्रत्युत इसके पीछे आकांक्षा है। यह उनके विकसन के प्रयत्न का एक भाग है। यह उनकी साधना का अंग है। वह इसके प्रति सतर्क और सावधान हैं कि उनके कार्य में कोई ऐसी अपूर्णता न आ जाये, कुछ भी ऐसा अवांछित, अनाध्यात्मिक उनके कार्य में न आ जाये जो दिव्यता की दिशा से विपरीत ले जाने वाला हो।

अत: वे ऐसे कर्ता हैं जो अपने कर्म के द्वारा उन्नत होना चाहते हैं। इसलिए वह गहन आत्म-विश्लेषक भी होते हैं। ऐसा कर्म मोक्षदायी है; क्योंकि यह मानव-सत्ता के सर्वोच्च लक्ष्यह्वह्वईश्वर की ओर निर्देशित करता है। ऐसा कर्म मोक्ष प्रदान करता है; क्योंकि यह इच्छा प्रेरित नहीं है, इसके पीछे कोई लोभ नहीं है। ऐसा कर्म मोक्षदाता है; क्योंकि यह भक्ति के भाव से श्रद्धापूरित भावना से किया जाता है, जिसमें भगवान् की विद्यमानता ही सारतत्त्व होती है। वह यह समझते हुए कर्म करते हैं कि भगवान् यहाँ और अभी विद्यमान हैं तथा यह कर्म उनके प्रति समर्पण है, एक ढंग से उनकी पूजा ही है। अत: उनका कार्य

आध्यात्मिक और ईश्वरोन्मुखी कर्म है। यह एक भाव-विशेष से, एक बोध-विशेष से सम्पन्न कर्म है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कार्य हैं जो अपरिहार्य हैं, भूख मिटाने के लिए भोजन करना, प्यास बुझाने के लिए पानी पीना, देह की अपरिहार्य कठोर आवश्यकताओंह्लह्लवस्त्र धोना, भोजन पकाना, स्नान इत्यादि करना ऐसे ही कार्य हैं। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किये हुए ऋषियों को भी यह सब कार्य करने ही पड़ते हैं। रमण महर्षि रसोईघर में सब्जी काटने में सहायता किया करते थे। गुरुदेव कार्यालय से सम्बन्धित सभी कार्यों को देखा करते थे।

यह सभी कार्य ऐसे हैं जो संकल्पित कर्मों अथवा इच्छा-प्रेरित कर्मों की श्रेणी में नहीं आते। यह ऐसे कार्य हैं जिनसे हम बच नहीं सकते। बद्ध-जीव इन कार्यों में संलग्न हैं। जीवन्मुक्त सन्त, ऋषि, मुनि, संन्यासीह्लह्लसभी यह कार्य करते हैं, क्योंकि यह अपरिहार्य हैं। किन्तु इन कर्मों को भी योग में परिवर्तित किया जा सकता है, पूजा और समर्पण में परिणित किया जा सकता है, यदि आप इन्हें भौतिक स्तर से उठा कर अपने भावों के द्वारा उच्चतर आयाम में रख देंह्लह्ल''जब मैं बोलता हूँ तो यह आपकी स्तुति है, हे प्रभु! जब मैं चलता हूँ तो यह आपकी परिक्रमा है, हे प्रभु! मेरी निद्रा ही समाधि की स्थिति है, क्योंकि मैं तब आपके साथ गहन ऐक्य-भाव से संयुक्त होता हूँ, हे प्रभु! मन, वाणी और इन्द्रियों के द्वारा मैं जो भी कार्य करता हूँ, सभी आपकी पूजा हैं, क्योंकि मेरे अन्तर्वासी प्रभु, मैं सब-कुछ आपको ही समर्पित करता हूँ।''

इस प्रकार हमारे स्वभाव द्वारा प्रेरित यह सब अपरिहार्य क्रियाएँ भी व्यर्थ जाने नहीं दी जानी चाहिए। उन्हें अनुत्पादक अथवा निरर्थक नहीं जाने दिया जाता। ऐसे कार्यों को भी ईश्वर की ओर की आध्यात्मिक जागरूकता तथा आध्यात्मिक गतिविधि में एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। एक कर्मयोगी भक्त का ऐसा ही आदर्श होना चाहिए।

जो लोग अज्ञान की अवस्था में कार्यों में संलग्न रहते हैं, वे सदैव अपने भीतर एक मानसिक उतार-चढ़ाव की स्थिति में फँसे रहते हैं। कभी वे उत्साह में होते हैं, तो कभी उदास होते हैं। कभी तनाव की अवस्था में होते हैं और कभी शान्त हो जाते हैं। कभी वह अत्यधिक रोष, घबराहट, बेबसी की अवस्था में घिरे हुए, संघर्षपूर्ण और भावुकताओं में उलझे हुए होते हैं। बाह्य कार्य-कलापों में उनकी मानसिकता जटिलता से उलझ कर फँसी हुई होती है।

यह योग तथा कर्म योग नहीं है, क्योंकि उनके भीतर कुछ ऐसा नहीं है जो भीतर की शान्त अवस्था के साथ सन्तुलन बना कर रख सके। भीतर की उस प्रशान्त अवस्था के साथ जो समस्त बाह्य तूफानों में भी स्थायी रूप से पूर्णतया प्रशान्त है, जिस आन्तरिक तत्त्व पर बाह्य क्रिया-कलापों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वास्तव में व्यक्ति के भीतर शान्ति, एक प्रशान्त अवस्था, प्रसन्नता और निज-आत्मा में सतत दृढ़ स्थिति है। भीतर हिलायी न जा सकने वाली समता की अवस्था है। अत्यधिक उत्तेजक बाह्य क्रियाशीलता के द्वारा भी आन्तरिक समता प्रभावित नहीं होती। वहाँ सदा सन्तुलन रहता है। व्यक्ति शान्ति

और गहन प्रशान्ति में रहता है और कार्यों में भी संलग्न रहता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने अत्यन्त संक्षेप में सूक्ति-रूप से इस प्रकार के कर्म का समर्थन किया हैह्वह्व ''मेरा स्मरण करो और अपना कर्तव्य करो।'' ''समस्त कर्म करते रहो और मुझमें निवास करो। दृढ़तापूर्वक मुझमें स्थित रहो।'' ''अपना आन्तरिक सन्तुलन बनाये रखो।'' इस प्रकार विभिन्न स्थलों पर वह ऐसी अवस्था की सम्भावना के विषय में हमें बोध कराते हैं जहाँ कर्मों के मध्य में पूर्ण समता होती है। वहाँ आन्तरिक क्लेश, व्याकुलता अथवा तनाव नहीं होता। मन आन्तरिक उच्चतर अवस्था से प्रभावित रहता है। वहाँ कर्म के मध्य में प्रशान्ति रहती है।

समस्त साधकों और योगियों को इसका अभ्यास करना चाहिएह्वह्वकिसी भी कार्य को आन्तरिक प्रशान्तावस्था को स्पर्श न करने देते हुए, अत्यधिक उत्तेजनापूर्ण सक्रियताओं में, अत्यावश्यक कार्यों में भी आत्मा के परमात्मा में निवास करने की आन्तरिक अवस्था को प्रभावित न होने देते हुए अपने कर्म में संलग्न रहने का अभ्यास प्रत्येक को करना चाहिए। इसे समझना चाहिए तथा अपने नित्य-प्रति के कार्यों पर प्रयुक्त करना चाहिए। कार्य तो अपरिहार्य हो सकते हैं; किन्तु कार्यों से प्रभावित हो जाना तथा ऐसी मानसिक विकृतियों की अवस्था में पड़ जाना जो स्वयं को तथा अन्यों को अशान्त करने वाली हों, इससे बचा जा सकता है।

''अपना कर्तव्य-कर्म करो और आन्तरिक व्याकुलता से मुक्त रहो।'' शान्ति, शीतलता, एक आन्तरिक अपरिवर्तनीय प्रशान्तता और समता बनी रहे, यह आदर्श होना चाहिए। तब कर्म आपकी दिशा को बदल देने वाला तत्त्व न रह कर योग बन जाता है। जब उचित परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण सहित देखा जाये, तब कार्य कार्य नहीं है, यह भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और योग का अंग है। यह उन सबका सहायक है।

ऐसी कर्मशीलता की कला और विज्ञानह्वह्व 'कर्म-कौशल्य'ह्वह्वआपको प्राप्त हो। तीव्र गति से घूमते चक्र का केन्द्रीय स्थल लगभग स्थिर होता है। अत: हमें यह जान लेना आवश्यक है कि यदि हमारे साधनामय जीवन ने तीव्र गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है तथा उसके द्वारा प्रकाश, प्रबोधन और ज्ञान-रूपी फल प्राप्त करना है, तो हमें इसी प्रकार के कर्म करने की आवश्यकता है।

अपने इस विषय के सम्बन्ध में, अपने आध्यात्मिक जीवन और लक्ष्य के सम्बन्ध में तथा अत्यावश्यक, अपरिहार्य उन कर्मोंह्वह्वजिनमें हमें लगना पड़ता हैह्वह्वके सम्बन्ध में हम गहराई से विचार करें। गहन विचार करने से हमें लाभ होगा। धीरे-धीरे हमें ज्ञान हो जायेगा कि कैसे जीवन जीना और कैसे कर्म करना है। और ऐसे कर्मशील जीवन में और जीवन के द्वारा हम समता सहित योग में उन्नत होंगे।

भगवान् की कृपा हम सब पर हो कि हम स्पष्ट देख सकें कि हमारे जीवन में कर्मों का स्थान क्या है, जीवन में कर्मों का लक्ष्य क्या है तथा हमें किस प्रकार स्वयं को कर्मों में प्रवृत्त करना चाहिए!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

इतिहास एवं पुराण ३

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

बहुमूल्य उपदेशों के अतिरिक्त रामायण और महाभारत महाकाव्यों में ब्रह्माण्ड-व्यापी महत् शक्तियों के क्रिया-कलापों का प्रतीकात्मक वर्णन भी है। ये शक्तियाँ मानव-व्यक्तित्व के अन्दर और बाहरह्नदोनों ओर क्रियाशील रहती हैं। यह प्रक्रिया ब्रह्माण्ड का मूल स्वभाव है।

वन में विचरते हुए राम संसार में भटकती जीवात्मा के प्रतीक हैं। उनकी धर्मपत्नी सीता मन हैं जो राम-रूपी जीवात्मा को स्वर्ण-मृग-रूपी ऐन्द्रिक विषयों के पीछे भागने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। लक्ष्मण विवेक-शक्ति और पौरुष के प्रतीक हैं। सीता-रूपी इच्छा-लोलुप मन लक्ष्मण-रूपी विवेक को अपमानित करता है और स्थिति को ठीक से न समझ पाने के कारण उसे (विवेक को) अपने पास से जाने के लिए बाध्य करता है। रावण के दश शिर दश इन्द्रियों के प्रतीक हैं। समस्त इन्द्रियाँ मिल कर सीता-रूपी मन का अपहरण करती हैं और रामह्नजीवात्माह्नबिलकुल अकेले रह जाते हैं तथा जीवन के अरण्य में अपनी जीवन-संगिनी सीताह्नमनह्नको खोजते-फिरते हैं।

इस प्रतीकात्मक वर्णन का दूसरा अर्थ यह भी है कि सीता-रूपी जीवात्मा राम-रूपी परम तत्त्वह्नब्रह्म से पृथक् हो गयी है। रावण-रूपी मन समस्त इन्द्रियों के सहयोग से सक्रिय है। अशोकवाटिका में बैठी सीता के लिए हनुमान्-रूपी गुरु द्वारा सम्प्रेषित (राम का) शुभ सन्देश जीवात्मा की मुक्ति की सम्भावना का मंगलकारी समाचार है। गुरु की अन्तर्दृष्टि की शक्ति मन के अन्धकार को दूर कर देती है और अज्ञान-निद्रा की अवस्था में पड़े जीव को झकझोर कर जगा देती है। अपनी दहला देने वाली शक्ति द्वारा हनुमान् ने राक्षसों का दर्प-नाश करने के लिए विध्वंस-लीला की और अकेले ही उनका सामना किया।

उपर्युक्त तथ्य का यह प्रतीकात्मक वर्णन है। इस वर्णन में सीता-राम का मिलन जीव तथा ब्रह्म का मिलन है जो अज्ञान-नाश के बाद ही हो पाता है।

इसी प्रकार महाभारत-ग्रन्थ भी विश्व में चल रही लीला का बहुत बड़ा प्रतीक है। दुष्टता के प्रतीक कौरव पाण्डव-रूपी उत्तमता (भलाई) को अपने देश से निर्वासित कर देते हैं। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में दुष्टता की विजय हुई है। इस संसार में उत्तमता या भलाई का कोई साथ नहीं देता और दुष्टता बलवती बन कर उसे अपमानित करती है। सच्चरित्रता तथा सदाचार के प्रतीक पाण्डवों को पराजित और क्षुब्ध हो कर अपना राज्य छोड़ कर जंगलों में निवास करने के लिए प्रस्थान करना पड़ता है। वन-प्रवास-काल में मुट्ठी-भर भले व्यक्तियों का सहयोग उन्हें मिलता है। उत्तमता (सदाचार) को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। प्रारम्भिक अवस्था में उसे ईश्वर से भी सहायता नहीं मिलती। कृष्ण सुदूर किसी स्थान पर बहुत व्यस्त हैं, पाण्डवों के संकट से नितान्त

अनभिज्ञ। इसी बीच वचन-भंग करने का प्रलोभन भी सामने आता है। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव तथा द्रौपदी युधिष्ठिर को परामर्श देते हैं कि वनवास की अवधि पूरी होने से पहले ही कौरवों से प्रतिशोध लेना चाहिए। धर्माचरण और सदाचार के प्रतीक दूरदर्शी युधिष्ठिर भली-भाँति समझते हैं कि यह उचित नहीं है। दुःखों और कष्टों की अग्नि-परीक्षा का अन्त होता है। उत्तमता को शुभ प्रतिफल प्राप्त होता है। शस्त्रधारी सेना पाण्डवों की सहायक बनती है। उत्तमता के भाग्य की डोर कृष्ण के रूप में स्वयं ईश्वर अपने हाथों में ले लेते हैं। दुष्टता के साथ युद्ध प्रारम्भ हो जाता है।

महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथि कृष्ण हैं। कठोपनिषद् में भी रथ-रथी-सारथि का रूपक है। जीवन-संग्राम में जो मार्ग-दर्शक सिद्धान्त है अथवा जो मानव की सर्वोत्कृष्ट बुद्धि है, वही सारथि है। अर्जुन जीवात्मा है। अश्व इन्द्रियाँ हैं। शरीर रथ है। मन लगाम है। ऐन्द्रिय विषय रथ का मार्ग तथा वे दिशाएँ हैं जिनकी ओर रथ बढ़ता है। दुष्टता के साथ छिड़े महाभारत-युद्ध में न केवल दुर्योधन की घोर दुष्टता का वरन् परिवर्तित होती हुई परिस्थितियों की सूक्ष्मता से बेखबर भीष्म का असमीचीन रूढ़िवाद और परम्परा के प्रति मोह का, द्रोण के व्यक्तित्व में पायी जाने वाली ज्ञान-शक्ति की अन्याय के साथ साँठ-गाँठ का तथा कर्ण के चरित्र में परिलक्षित कुसंग के कारण दूषित चरित्र और योग्यता का भी सामना करना पड़ता है।

समस्त ब्रह्माण्ड के भाग्य के नियन्ता ईश्वर की अपनी अलग योजना है, जिसके अनुसार योगाचार्य कृष्ण (भगवद्गीता में वर्णित) अपने सदुपदेशों द्वारा भ्रमित जीवात्मा (अर्जुन) को जाग्रत करते हैं और अपने विश्व-रूप के माध्यम से उसमें उत्साह का संचार करते हैं। साथ ही, दुष्टता का विनाश तथा धर्म को संस्थापित करने का कार्य भी स्वयं ही करते हैं। जीवात्मा उनका उपकरण मात्र बन कर रह जाता है। शरीर-रूपी रथ में जब तक ईश्वर उपस्थित रहता है, यह क्रियाशील रहता है। जैसे ही कृष्ण अर्जुन के रथ से उतरते हैं, रथ राख की ढेरी बन जाता है। जब जीव में वास्तविक आत्म-समर्पण का भाव उत्पन्न होता है, तब ईश्वर स्वयं उसकी चिन्ता करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर कृष्ण भीष्म से युद्ध करने के लिए शस्त्र उठा लेते हैं। जयद्रथ-वध के प्रसंग में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीव की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए ईश्वर स्वयं तत्पर रहते हैं।

धर्म गणित के नियमों के समान अपरिवर्तनीय नहीं है। यह एक जीवन्त, ओजस्वी, परिवर्तनीय, नियन्त्रक शक्ति है। धर्म का यह स्वरूप कर्ण की पराजय में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जब शरीर के भयानक रोगों द्वारा नष्ट हो जाने की आशंका हो, तब शल्य-चिकित्सक को उस पर चाकू चलाना ही पड़ता है। चाहे कोई पूजनीय भीष्म ही क्यों न हो, राजोचित सम्मान प्राप्त करने की पात्रता रखने वाला दुर्योधन ही क्यों न हो, यदि वह सृष्टि की दैवी व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करता है तो उसका दमन किया ही जाना चाहिए।

महाकाव्यों के प्रतीकों के उपर्युक्त वर्णन का तात्पर्य यह नहीं है कि वे मात्र प्रतीक हैं और उनमें सत्यता नहीं है। कुछ विचारकों की धारणा है कि ये

महाकाव्य किसी चतुर मस्तिष्क के कुचक्र हैं और इनका ऐतिहासिक सत्यता से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह दृष्टिकोण अतिवादी है तथा सत्य सदैव मध्यम मार्ग में ही उपलब्ध होता है। इन ग्रन्थों के कुछ कम महत्त्वपूर्ण उपाख्यान सम्भवतः पुरानी अनुश्रुतियों या परम्पराओं से विकसित हुए होंगे, परन्तु इन ग्रन्थों के ऐतिहासिक पात्रों के अस्तित्व को सन्देह की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। सम्भवतः कुछ लेखक इस संसार में आध्यात्मिक या दिव्य जीवन की निष्फलता को प्रमाणित करने की उत्सुकता में राम और कृष्ण को मात्र कवियों की कल्पना की उपज कह कर उनको पदावनत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कृष्ण के युग में भी कम-से-कम एक ऐसा व्यक्ति था जिसने उनके अस्तित्व को ही नकार दिया था।

(अनूदित)

प्रकाशित हो गयी है :

महकते फूल

लेखक : स्वामी रामराज्यम्

जीवन के उच्चतर मूल्योंह्वप्रेम, करुणा, सहानुभूति, सेवा आदिह्वकी सुगन्ध से भर देने तथा ईश्वरोन्मुखी दिव्य जीवन व्यतीत करने का मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से लिखी गयी १०६ बाल-कहानियों के इस संग्रह के रूप में महकते फूलों का यह गुलदस्ता बाल-पाठकों को समर्पित है। इस संग्रह की कहानियाँ द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय की हिन्दी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें एक ही पुस्तक में संकलित पा कर अब बाल-पाठक इन्हें अपनी सुविधानुसार बार-बार पढ़ सकेंगे। इस प्रकार इनके सन्देश को हृदयंगम करने में उन्हें सरलता होगी।

सरल-सरस भाषा-शैली में प्रस्तुत ये कहानियाँ बाल-पाठकों का ही नहीं, उनके अभिभावकों का भी मन मोहती रही हैं। नव-दम्पतियों के लिए भी ये कहानियाँ उपयोगी हैं। इन्हें पढ़ कर वे अपनी भावी सन्तानों पर दिव्य जीवन के संस्कार डाल सकेंगे।

विद्यालय-पुस्तकालयों के व्यवस्थापक कहानियों के इस संग्रह को बाल-पाठकों के लिए बहुत उपयोगी पायेंगे। बालकों को दिये जाने वाले उपहारों के रूप में भी यह संग्रह अति उपयुक्त सिद्ध होगा।

पृष्ठ-संख्या : २२४ आकार : डेमी मूल्य : रु० ९५/-

प्राप्ति-स्थान

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द पब्लिकेशन लीग

पत्रालय : शिवानन्दनगरह्व२४९ १९२

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति-कथाएँ १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

लोभी बालक

अमृतसर में एक लोभी बालक रहता था। उसके घर में एक सुराही थी, जिसकी गरदन पतली थी। वह किशमिशों से आधी भरी हुई थी। उसने अपना हाथ सुराही में डाला और किशमिशों से मुट्ठी भर ली, किन्तु मुट्ठी भरी हुई होने के कारण वह अपना हाथ बाहर नहीं निकाल सकता था।

अपना हाथ बाहर निकालने का उसने भरसक प्रयत्न किया, पर निकाल न सका। वह रोने लगा। उसका रोना उसकी माँ ने सुना। वह आयी और पूछने लगीह्न ''बच्चे, क्या हो गया?'' बच्चे ने जवाब दियाह्न''मेरा हाथ अन्दर फँस गया है। बाहर नहीं निकल रहा है।''

माँ ने कहाह्न''प्यारे बच्चे, कुछ किशमिशें गिरा दे, हाथ निकल आयेगा।'' लड़के ने वैसा ही किया और उसका हाथ बाहर निकल आया। माँ ने कहाह्न''बच्चे, फिर कभी लालच न करना।''

लालच से मनुष्य दु:खी होता है। इसलिए गोविन्द! कभी लालच न करना। सन्तोष रखना।

झूठ कभी न बोलो

झूठ बोलना महापाप है। झूठे से सभी घृणा करते हैं। उस पर कोई विश्वास नहीं करता है। वह सच बोले, तब भी लोग उसकी बात पर विश्वास नहीं करते।

एक लड़का गायें चराया करता था। एक बार वह जोर-जोर से चिल्लायाह्न''भेड़िया आया, भेड़िया आया। बचाओ।'' आस-पास के लोग दौड़े आये। उनको देख कर लड़का हँसने लगा और बोलाह्न ''भेड़िया कहाँ है! मैंने तो यों ही मजाक किया था।'' ऐसा उसने तीन बार किया। फिर एक दिन सचमुच भेड़िया आ गया। लड़का मदद के लिए चिल्लाने लगा। लोगों ने सोचा कि लड़का मजाक कर रहा है, इसलिए वे नहीं आये। भेड़िया लड़के को खा गया।

देखो, झूठ बोलने से बड़ा खतरा होता है। अपने दोषों को स्वीकार कर लो। कभी झूठ मत बोलो। तुम साहसी बनोगे। तुम्हारा मन साफ और पवित्र बनेगा। सब तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुमसे प्यार करेंगे।

चालाक बन्दर

एक नदी के किनारे नारियल के पेड़ पर एक बन्दर रहता था। एक मगर उसका मित्र था। बन्दर मगर को नारियल दिया करता था। मगर ने एक दिन नारियल ले जा कर अपनी पत्नी को दिया। उसने नारियल खाया और बोलीह्न''यह फल बड़ा स्वादिष्ट है। मैं तुम्हारे मित्र का जिगर खाना चाहती हूँ, क्योंकि रोज मीठे नारियल खाने से उसका जिगर और भी स्वादिष्ट हो गया होगा।''

मगर बन्दर के पास जा कर बोलाह्न''चलो, आज नदी में हम दोनों खूब सैर करेंगे।'' बीच धारा में जब दोनों पहुँचे, तब मगर बोलाह्न''मेरी पत्नी तुम्हारा जिगर खाना चाहती है।''

बन्दर ने जवाब दियाह्न''मैं तो अपना जिगर पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ।'' तब दोनों किनारे लौट आये। बन्दर पेड़ पर कूद गया और बोलाह्न''दोस्त ! मुझ पर विश्वास करके तुम मूर्ख ही बने। मैं भला पेड़ पर अपना जिगर कैसे छोड़ सकता हूँ!'' मगर बड़े दु:ख के साथ वापस लौट गया। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

एक-दूसरे से बढ़ कर ३ (रामराज्यमम्)

सितम्बर २०१० से ३ पृष्ठ की फीलम निकालनी है

एक-दूसरे से बढ़ कर ३ (रामराज्यमम्)

सितम्बर २०१० से ३ पृष्ठ की फीलम निकालनी है

एक-दूसरे से बढ़ कर ३ (रामराज्यमम्)

सितम्बर २०१० से ३ पृष्ठ की फीलम निकालनी हैं

चिदानन्द-चिन्तन

आप शरीर, मन और बुद्धि नहीं हैं। आप दिव्य हैं, महान् हैं। आप अस्थि और मज्जा-रचित इस नाशवान् शरीर से तथा परिवर्तनशील मन एवं बुद्धि से पृथक् और भिन्न हैं। आप निर्विकल्प, निर्विकार, असीम, अदृश्य आत्मा हैं। आप व्यर्थ ही विषय-वासनाओं की कष्टप्रद अवस्थाओं में पड़े हैं। आप स्वप्न देख रहे हैं। यह सत्य नहीं है, यथार्थ नहीं है। जागिए और निज-स्वरूप को पहचानिए।

* * *

जो-कुछ भी आप बनना चाहते हैं, बन सकते हैं। यही कर्म तथा कर्म-फल का नियम है। जो भी कार्य आप करेंगे, उसका परिणाम अवश्यम्भावी है। अपने प्रारब्ध के लिए आप स्वयं उत्तरदायी हैं। अपने भाग्य के आप स्वयं निर्माता हैं। आज ही निश्चय कीजिए और कैवल्य-पद प्राप्त कीजिए।

* * *

जीव ब्रह्म का ही अंश है, इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। जिन व्यक्तियों ने इस बात को समझा, वे महापुरुष बन गये, उनका जीवन दिव्य हो गया और वे ईश्वर हो गये।

* * *

मनुष्य का जन्म मुख्यतः दो कार्यों के लिए हुआ हैह्लपरोपकार तथा भगवद्-भक्ति। इस संसार मेंह्लक्षण-भंगुर संसार में पल-भर का जीवन है; अतः इसे पर-हित में लगाना चाहिए। मनुष्य तो पथिक है। पथिक का किसी स्थान से मोह नहीं रहता। वह अपने गन्तव्य की ओर सदा ध्यान रखता है। सेवा से मन शुद्ध होता है, प्रसन्नता मिलती है। इन बातों पर विचार करना चाहिए। यही हमारी संस्कृति का तत्त्व है।

* * *

गुरु को प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी यदि शिष्य को किसी वस्तु का अभाव खटकता है, किसी अनुभव तथा सुख की आवश्यकता होती है, तो इसका अर्थ है कि उसकी भक्ति, साधना तथा विश्वास में कहीं-न-कहीं कोई त्रुटि अवश्य है। उसने गुरु को अशेष आत्म-समर्पण नहीं किया है। गुरु को प्राप्त कर लेने के पश्चात् तो सभी इच्छाएँ तथा कामनाएँ समाप्त हो जाती हैं।

* * *

व्यक्ति वस्तुतः बुरा नहीं होता। उसके विचार में, उसकी भावना में विकार उत्पन्न हो सकता है, पर उसमें परिवर्तन भी लाया जा सकता है। फिर यदि तुम योगी हो, तो तुममें भले-बुरे का भेद ही कैसा! समदृष्टि रखो। तुम्हारी दृष्टि में तो लोगों के गुण ही आने चाहिए।

* * *

पुष्प खिलता है सौन्दर्य बिखेरने के लिए, दीपक जलता है प्रकाश फैलाने के लिए और अगरबत्ती जलती है सुगन्ध प्रसारित करने के लिएह्लअर्थात् जो

भी अन्दर की वस्तु है, उसे बाहर लाना प्रकृति का नियम है। मनुष्य के भीतर दिव्यता है; आत्म-तत्त्व है; शक्ति, आनन्द और प्रकाश है। उसे बाहर निकालना चाहिए, व्यवहार में लाना चाहिए। यही जीवन है। इसी से जीवन दिव्य बनता है।

* * *

पूजा के साथ सेवा करने से उसका महत्त्व दुगना हो जाता है। जैसे पक्षी दोनों पंखों के बिना नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार वही पूजा फलदायक बनती है, जिससे किसी की सेवा भी होती हो। यदि पूजा के साथ-साथ कटु शब्दों का भी प्रयोग किया जाये, तो उसका प्रभाव क्षीण हो जायेगा

* * *

व्यक्ति वस्तुतः बुरा नहीं होता। उसके विचार में, उसकी भावना में विकार उत्पन्न हो सकता है, पर उसमें परिवर्तन भी लाया जा सकता है। फिर यदि तुम योगी हो, तो तुममें भले-बुरे का भेद ही कैसा! समदृष्टि रखो। तुम्हारी दृष्टि में तो लोगों के गुण ही आने चाहिए।

* * *

जो कार्य मैं स्वयं नहीं कर सकता, उसे मैं दूसरों से करने के लिए कदापि नहीं कह सकता।

* * *

व्यक्ति वस्तुतः बुरा नहीं होता। उसके विचार में, उसकी भावना में विकार उत्पन्न हो सकता है, पर उसमें परिवर्तन भी लाया जा सकता है। फिर यदि तुम योगी हो, तो तुममें भले-बुरे का भेद ही कैसा! समदृष्टि रखो। तुम्हारी दृष्टि में तो लोगों के गुण ही आने चाहिए।

सूचना

स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव

शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी भगवान् सुब्रह्मण्य का पवित्र स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव **७ से १२ नवम्बर २०१०** तक मनाया जायेगा। आश्रम के 'भजन हाल' में प्रतिष्ठित भगवान् कार्तिकेय की मूर्ति की अभिषेक, अर्चना, पुष्पालंकार आदि से नित्य विशेष पूजा होगी। भगवान् के स्तुतिपरक ग्रन्थों का दैनिक पाठ भी होगा। उत्सव की समाप्ति पर अन्तिम दिन वैदिक मन्त्र, भजन, कीर्तन, गायन आदि के साथ बृहत् पूजा होगी।

हम सभी भक्तों को इस पवित्र पूजा में उपस्थित एवं सम्मिलित होने का हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। अपने आगमन की पूर्व-सूचना देने की कृपा करें। जो भक्त गण **'व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पत्रालय शिवानन्दनगर २४९१९२, उत्तराखण्ड'** को पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे, उनके नाम से विशेष संकल्प के साथ पूजा की जायेगी।

आप सब पर भगवान् स्कन्द की कृपा रहे!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव के गहन आशीर्वाद से द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से विनम्र सेवा में निरन्तर निरत है। यह ऐसे बेघरबार निर्धन रोगियों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करता है, जिन्हें बीमार होने के कारण भरती किये जाने की आवश्यकता है, किन्तु साधन-हीन होने के कारण असमर्थ हैं।

स्त्री-रोगी-कक्ष में रक्षाबन्धन के दिन स्मृतियों की पवन बहने लगती है। हृदय के कोने में भाई-बहन के प्रेम की, बहनों के विश्वास की कहानियाँ उभरने लगती हैं। ऐसे घाव पुनः रिसने लगते हैं जब आवश्यकता के समय भाई अनुपस्थित रहे। जब किसी ने राखी के बन्धन की निर्भरता के सुरक्षात्मक कसाव को अनुभव करने का प्रयत्न किया; किन्तु बन्धन ढीले पड़ गये और 'राखी' कहाँ गयी, पता नहीं चला। जब उसे घर छोड़ कर निकलना पड़ा...जब 'रक्षा' और उसका 'अर्थ' पूर्णतया लुप्त हो गया था! जब उसे मारा-पीटा गया, गालियाँ दी गयीं, अपमानित किया गया, घर से निकाल दिया गया, जब उसे किसी के समक्ष शिकार बन जाने से बचने के लिएह्वह्वअपने सम्मान की रक्षा के लिएह्वह्वभाग जाना पड़ा; जब उस वचन को निभाने का समय था, क्योंकि कलाई पर बाँधी जाने वाली राखी को स्वीकार करते हुए उसने सुरक्षा का, विश्वास का, देख-रेख का वचन देते हुए कहा थाह्वह्व''हाँ, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। मेरा विश्वास करो।'' कहाँ गया वह और उसका वचन? उसकी जिम्मेवारी कहाँ गयी? एकाकी छोड़ दिये जाने का यह दर्द! विशेष रूप से उनके द्वारा जिन पर भरोसा किया था, निर्भर किया था! यह दर्द उस दर्द से कहीं अधिक तीव्र, कहीं अधिक असहनीय है जो अज्ञात लोगों अथवा राहगीरों द्वारा दिये गये कष्टों से होता।

मन के अतीत में चले जाने के इस स्वभाव के होते हुए भी, 'शिवानन्द होम' में रक्षाबन्धन का दिन खुशियों, आनन्द, उत्साह से पूर्ण अति सुन्दर उत्सवह्वह्वआशा और नूतन-विश्वास के प्रतीक के रूप में मनाया गया। यह जानते हुए कि 'एक वह' ही है जिस पर परिपूर्ण अडिग विश्वास किया जा सकता है, केवल 'एक वही' अपने वचन को निभाने वाला है, 'वही' आपकी रक्षा के बन्धन का सुपात्र है और जो स्वयं अपना सत्य-वचन है।

''अतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो आप कर सकते हैं, वह ये है कि आप अपना रक्षाबन्धन उन्हें बाँधें जो आपके परम पिता, आपके वास्तविक माता, भाई, बहन, मित्र, सहायक, रक्षक, शुभ-चिन्तक और परम आधार हैं। इससे बढ़ कर बुद्धिमत्ता और क्या हो सकती है? अतः हम बुद्धिमान् बनें और प्रसन्न हों और उनकी सुदृढ़ सुरक्षा में, कभी भी असफल न होने वाली सुरक्षा में, सदा-सर्वदा विद्यमान उस प्रभु की सुरक्षा में निश्चिन्त हो जायें जो प्रभु हमारे निकटतम हैं और हमारे प्रियतम हैं।'' (स्वामी चिदानन्द)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

परमाराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का १२३ वाँ जन्मोत्सव

''८ सितम्बर वह पावन, स्व-धन्य शुभ दिन है, जिस दिन इस धरा पर दिव्यता का अवतरण हुआ था।''

(परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

आनन्द कुटीर के दिव्य देवताह्नहमारे अतीव श्रद्धास्पद परमाराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का १२३ वाँ जन्मोत्सव ८ सितम्बर २०१० को मुख्यालय आश्रम में अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं पावनता से मनाया गया।

इस शुभ दिवस का कार्यक्रम प्रातः ब्राह्ममुहूर्त की प्रार्थना, ध्यान तथा उसके तुरन्त बाद डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के प्रेरणास्पद प्रवचनों के साथ हुआ। इसके उपरान्त प्रभातफेरी आयोजित की गयी। विश्व-शान्ति एवं सर्वकल्याण-मंगलार्थ आश्रम की यज्ञशाला में विशेष हवन किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में पुष्पों की अत्यन्त भव्य साज-सज्जा से युक्त सद्गुरुदेव के 'समाधि मन्दिर' में अभिषेक तथा उसके उपरान्त गुरुदेव की परम पावन पादुकाओं की 'समाधि हाल' में महापूजा की गयी। श्रद्धेय गुरुदेव को प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आये हुए भक्तों तथा आश्रम के अन्तेवासियों, संन्यासियों और ब्रह्मचारियों से 'समाधि हाल' खचाखच भरा हुआ था। पूजा के उपरान्त सद्गुरुदेव की महिमा का वर्णन करते हुए भजन तथा कीर्तन हुआ और उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज के गुरुदेव के जीवन-चरित एवं शिक्षाओं पर प्रेरणास्पद प्रवचन हुए।

सन्ध्या समय 'श्री विश्वनाथ घाट' पर गंगामैया की विशेष पूजा एवं आरती का आयोजन किया गया था। रात्रि के सत्संग में दैनिक प्रार्थना एवं स्तोत्र-पाठ के अतिरिक्त हमारे श्रद्धेय 'ज्ञान-सूर्य' सद्गुरुदेव को श्री चन्द्रशेखर शर्मा तथा श्री शक्तिधर शर्मा घनापाठी द्वारा कृष्णयजुर्वेद पारायण के रूप में 'वैदिक पुष्पांजलि' समर्पित की गयी। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने विविध अंशों का परिचय देते हुए संक्षिप्त व्याख्या भी की। आरती एवं विशेष प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

हमारे शाश्वत निर्देशक एवं प्रेरक, हमारे साक्षात् प्रभु, श्रद्धेय सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आशीर्वाद हम पर हों कि हमारी उनके श्रीचरणों में गहन भक्ति बनी रहे!

अपने तुच्छ व्यक्तित्व के साथ तादात्म्य का विचार ही आपके सबसे महान् बन्धन तथा क्लेश का कारण है। वही मानव के सभी दुःख, असन्तोष, विरोध तथा संघर्ष का मूल कारण है।

स्वामी चिदानन्द

मुख्यालय आश्रम में श्री कृष्ण जयन्ती महोत्सव

''प्रत्येक के हृदय में उस शाश्वत सत्ता की विद्यमानता का उद्भव हो जाना वास्तविक श्री कृष्ण जयन्ती है।''

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

श्री कृष्ण जयन्ती का परम पावन दिवस मुख्यालय आश्रम में १ सितम्बर २०१० को समुचित श्रद्धा, भक्ति एवं अपूर्व आध्यात्मिकता से सम्पन्न हुआ। महोत्सव के मंगलाचरण के रूप में ८ से २५ अगस्त २०१० तक श्रीमद्भागवतम् का मूल पारायण किया गया। २८ से ३१ अगस्त तक नित्य दो घण्टे परम पावन द्वादशाक्षरी मन्त्र **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** तथा **'श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव'** का भी सामूहिक संकीर्तन किया गया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त ध्यान-प्रार्थना सत्र के तुरन्त बाद प्रभातफेरी की गयी। 'श्री विश्वनाथ मन्दिर' के प्रांगण में डी. एल. एस. मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा प्रातः ७ बजे दीप-प्रज्वलन के साथ द्वादशाक्षरी मन्त्र के अखण्ड-कीर्तन का शुभारम्भ हुआ जो सायं ६ बजे तक चलता रहा।

इस पावन अवसर पर 'श्री विश्वनाथ मन्दिर' का विविध प्रकार के पुष्प-गुच्छों, रंग-बिरंगे विद्युत् बल्बों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के सुगन्धित फूलों से शृंगार किया गया था। आश्रम यज्ञशाला में विश्व-शान्ति एवं सर्वकल्याण हेतु हवन भी किया गया। मन्दिर के गर्भ-गृह में विराजमान् मुरलीमनोहर का परम्परागत पूजन रात्रि ८ बजे प्रारम्भ हुआ, जिसमें भगवान् के विग्रह का पुरुष-सूक्त एवं नारायण-सूक्त के मन्त्रोच्चारण सहित अभिषेक किया गया। इसके बाद भगवान् श्री कृष्ण के मनोमुग्धकारी विग्रह का अत्यन्त सुन्दर-सुहावने भाँति-भाँति के सुगन्धित फूलों से शृंगार करके सहस्रनामावली से पुष्पार्चना की गयी। आश्रम के सभी अन्तेवासियों, अतिथियों, श्रद्धालु भक्तों और दर्शकों ने व्यक्तिगत रूप से अभिषेक तथा अर्चना में भाग लिया।

अभिषेक-अर्चना के साथ-साथ मन्दिर-प्रांगण में भगवान् श्री कृष्ण के गुण-गान करते हुए अत्यन्त भावपूर्ण भजन-कीर्तन चलता रहा, जिसने समस्त वातावरण को दिव्य तरंगों से ओत-प्रोत कर दिया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने ११.३० बजे १० वें स्कन्द में वर्णित भगवान् के जन्म के प्रसंग का पारायण किया। तत्पश्चात् महा-आरती की गयी। 'अन्नपूर्णा हाल' में प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

मुरलीधर भगवान् श्री कृष्ण हम पर कृपा करें और इस संसार के दलदल में से हमारा उद्धार करें!

मुख्यालय आश्रम में सम्प्रदाय भजन-कीर्तन उत्सव

समस्त सद्ग्रन्थ प्रभु-नाम-महिमा का गुणगान करते समय इस बात पर बल देते हुए उद्घोषित करते हैं : 'कलौ केशव कीर्तनात्'ह्नह्नइस कलियुग में भगवद्-प्राप्ति का एकमात्र सर्वोत्तम सहज उपाय है प्रभु-नाम-संकीर्तन।

संकीर्तन-सम्राट् सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दिव्य सान्निध्य में ४ और ५ सितम्बर को पावन समाधि मन्दिर में एक द्वि-दिवसीय 'सम्प्रदाय भजन-कीर्तन उत्सव' का आयोजन किया गया। श्री विष्णु सहस्रनाम नाम-संकीर्तन मण्डली, दिल्ली द्वारा श्री शंकर मनियन् की अध्यक्षता में पुदुकोट्टै गोपाल कृष्ण भागवतार पद्धति के अनुसार अत्यन्त भावपूर्ण परम्परागत भजन प्रस्तुत किये गये।

४ सितम्बर अपराह्न में श्री त्यागराज कृत तेलुगु-कीर्तन, श्री पुरन्दरदास एवं श्री कनकदास कृत कन्नड़-कीर्तन, मराठी सन्तों के अभंग, श्रीनारायण तीर्थ की 'कृष्णलीला तरंगिणी' में से चयनित भजन और जयदेवकृत 'गीतगोविन्द' (अष्टपदी), मलयालम और तमिल भजन,

गोस्वामी तुलसीदास के भजन तथा कबीरदास और मीराबाई के भजन भी गाये गये। उसी दिन सायंकालीन सत्संग में दीप प्रदक्षिणम् अर्थात् प्रज्वलित दीपक के चारों ओर भजन-कीर्तन सहित नृत्य किया गया। ५ सितम्बर को पूर्वाह्न में राधा कल्याणम् तथा डोलोत्सव किया गया, जिसमें सन्त त्यागराज तथा अन्य सन्तों के भजन परम्परागत ढंग से प्रस्तुत किये गये। सायंकालीन सत्संग में 'देवता ध्यान भजन' में विभिन्न देवताओं के स्तुतिपरक भजन तथा रात्रि सत्संग में आंजनेय उत्सव सहित कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

इस भजन-कीर्तनोत्सव में सम्मिलित होने में सभी को एक विलक्षण एवं अद्भुत अनुभव प्रतीत हुआ। अमृतमय भगवन्नाम संकीर्तन ने प्रत्येक भक्त-हृदय को दिव्य भाव से ओत-प्रोत कर दिया। इस पावन पीयूष-गंगा में गोता लगा कर हर कोई आनन्दित, नवीकृत, उत्थित और स्वयं को धन्य अनुभव कर रहा था।

मण्डली के सदस्यों को महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा कोषाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज द्वारा सम्मानित किया गया।

परम पिता परमात्मा हमें सतत भगवन्नाम-स्मरण के आशीर्वाद से धन्य करें!

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज अगस्त-सितम्बर माह में सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

स्वामी जी महाराज २७ अगस्त को उड़ीसा में जगन्नाथपुरी के निकट बालिगुआली में 'चिदानन्द शान्ति आश्रम' गये। वहाँ के कार्य-भारी श्रद्धेय श्री स्वामी जितमोहानन्द जी के साथ आश्रम के प्रबन्धन-कार्य तथा अन्य गतिविधियों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक बात-चीत की।

१ सितम्बर पावन जन्माष्टमी के दिन स्वामी जी महाराज ने नव-निर्मित 'चिदानन्द ध्यान मन्दिर' का उद्घाटन किया। एक विशाल कक्ष सहित यह एक सुन्दर भवन है, जिसमें श्री आदि शंकराचार्य जी महाराज, परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के विग्रहों की स्थापना की गयी है। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पद को श्रद्धेय गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी ने सुशोभित किया तथा परम पूज्य बाबा चैतन्य चरण दास जी, आदरणीय प्रो.ह्रुदानन्द रे तथा अन्य सन्तों ने भी भाग लिया। यह विशाल कक्ष आश्रम के नियमित रूप से होने वाले सत्संग, मासिक 'साधन गंगा शिविर' तथा ध्यान करने के लिए बनाया गया है। 'ध्यान-मन्दिर' का निर्माण, गहन-भक्तों के अत्यन्त प्रेमपूर्वक दिये गये दान, आश्रम के प्रभारी स्वामी जी की निष्ठापूर्वक की गयी अथक सेवा तथा बहुत से समर्पित भक्तों एवं अन्तेवासियों की निःस्वार्थ सेवा के फलस्वरूप सम्भव हुआ है। इसके निर्माण से आश्रम की चिर-वांछित इच्छा एवं आवश्यकता की पूर्ति हुई है; क्योंकि आश्रम में होने वाले बहुत से कार्यक्रम अब सुविधापूर्वक हो सकेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किया गया था; अतः अत्यन्त सुरुचिपूर्ण, प्रेरणाप्रद तथा पूर्ण सफल रहा।

उसी दिन सायंकाल से पाँच-दिवसीय साधन गंगा शिविर का शुभारम्भ किया गया। बहुत से सन्त, गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी तथा अन्य सुप्रतिष्ठित व्यक्ति इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। स्वामी जी महाराज ने इस कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रवचन दिया। २ से ५ सितम्बर तक होने वाले इस साधना शिविर में उड़ीसा के विभिन्न भागों से ४०० से अधिक साधक सम्मिलित हुए थे। प्रत्येक दिवस स्वामी जी महाराज ने साधकों को, प्रातःकालीन ध्यान-प्रार्थना के सत्र में तथा पूर्वाह्न सत्र में सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिये तथा उनमें साधना, ध्यान तथा गुरुदेव के समन्वय-योग विषयों पर प्रवचन दिये। सायंकालीन सत्संग परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि के सम्बन्ध में होता था, जिसमें स्वामी जी महाराज ने भी भाग लेते हुए प्रवचन दिये।

६ सितम्बर को परन पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि का परम पावन दिवस मनाया गया, जिसमें स्वामी जी महाराज भी सम्मिलित हुए। सायंकालीन सत्संग में पूज्य बाबा चैतन्य चरण दास जी, पूज्य बाबा जी सच्चिदानन्द जी, पूज्य प्रोफेसर ह्रुदानन्द रे जी, अन्य बहुत से भक्त तथा सन्त भी आये हुए थे, इस सत्संग में प्रवचन भी हुए जिसमें परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलियाँ समर्पित की गयीं। स्वामी जी महाराज ने भी इस अवसर पर प्रवचन दिया।

८ सितम्बर को गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया। स्वामी जी महाराज ने इसमें सम्मिलित होते हुए प्रवचन दिया।

१० से १४ सितम्बर तक स्वामी जी महाराज 'स्वामी शिवानन्द सैंटेनरी बॉयज़ हाईस्कूल, खण्डगिरि, भुवनेश्वर' जिसके कि स्वामी जी महाराज अध्यक्ष हैं, वहाँ गये तथा स्कूल की प्रबन्धन समिति के साथ विविध महत्त्वपूर्ण विषयों पर वार्तालाप किया। १४ सितम्बर को स्वामी जी महाराज ने विद्यालय की प्रबन्धन समिति की गोष्ठी में भी भाग लिया।

६६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स (सितम्बर-अक्तूबर २०१०) का उद्घाटन कार्यक्रम

डी. एल. एस. मुख्यालय के ही एक विभागह्वह्व योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के ६६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का उद्घाटन १ सितम्बर २०१०, श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अत्यन्त पावन दिवस को हुआ। विभिन्न बारह प्रान्तों में से कुल ४३ विद्यार्थियों ने शिवानन्द आश्रम के इस गुरुकुल में दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के उद्देश्य को ले कर भाग लिया।

माँ दुर्गा तथा दत्तात्रेय भगवान् के पावन मन्दिरों में पूजा के साथ इस उद्घाटन-समारोह का शुभारम्भ किया गया। फिर एकाडेमी के वाचनालय में 'जय गणेश' कीर्तन एवं 'गुरु-स्तोत्र' पाठ के उपरान्त एकाडेमी के कुल-सचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने सभी उपस्थित श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया।

इस ज्ञान-यज्ञ के शुभारम्भ के प्रतीक-रूप में डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने दीप प्रज्वलित किया। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने उद्घाटन-प्रवचन में विद्यार्थियों को उच्च विचार एवं श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि इस प्रकार कोर्स के उपरान्त विद्यार्थी स्वयं को श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में रूपान्तरण करते हुए सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उत्तम एवं सच्चे प्रतिनिधि बन कर अपने-अपने निवास-स्थानों पर पहुँचें। इसके उपरान्त एकाडेमी के उपकुल-सचिव प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने विद्यार्थियों को सभी उपस्थित श्रोताओं से परिचित कराया। माँ सरस्वती की वन्दना एवं प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की अपार कृपा-वृष्टि सभी पर हो!

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहिवारा (छत्तीसगढ़): वर्ष २०१० के अगस्त माह में शाखा ने दैनिक सत्संग, एकादशी की तिथियों को महामृत्युंजय-मन्त्र-जप और दिनांक १६ अगस्त को ''शिवजी भगवान् को अभिषेक'' का विशेष कार्यक्रम आयोजित किये।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा ने प्रति रविवार को महामृत्युंजय मन्त्र जप के साथ साप्ताहिक सत्संग तथा श्री हनुमान जी के स्तोत्र और श्लोकपाठ एवं भजन प्रति मंगलवार को सम्पन्न किये। दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सेवा तथा प्याऊ द्वारा जल-सेवा का सातत्य रहा।

बेंगुलूरु (कर्नाटक): शाखा की नियमित गतिविधियाँ निम्नानुसार हैंह्वह्वप्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति शुक्रवार श्री विष्णु भगवान् और श्री देवी के स्तोत्रपाठों के साथ मातृ-सत्संग, प्रति माह, प्रथम रविवार को एक धार्मिक स्थान पर विशेष सत्संग, तथा तृतीय रविवार को ३ घण्टों का कीर्तन। **विशेष गतिविधियाँ**ह्वह्व(१) आदरणीय श्री स्वामी शरवणभवानन्द जी के विगत आत्मा की शान्ति-प्रार्थना दिनांक ११ जुलाई को। (२) श्री गुरु-पूर्णिमाह्वह्वपूर्वाह्व में भक्ति-संगीत, पादुका-पूजा और गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी

महाराज के जीवन तथा उपदेशों पर प्रवचन, सम्मिलित विशाल समुदाय को प्रसाद-वितरण।

बरबिल् (उड़ीसा): शाखा द्वारा प्रति गुरुवार और सोमवार को साप्ताहिक सत्संग किये गये। विशेष कार्यक्रमह्न(१) श्री गुरु-पूर्णिमा और आराधना-दिन के विशेष कार्यक्रमों के साथ, वार्षिक साधना-सप्ताह और ५ दिनोंपर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी असीमानन्द जी द्वारा प्रवचन। (२) आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, पूर्वाह्न में पादुका-पूजा और भजन और विशेष सान्ध्य-सत्संग। माह अगस्त में शाखा की समाज-सेवा में, स्वामी शिवानन्द होमियोपैथिक चैरिटेबल औषधालय द्वारा ४००० व्यक्तियों को सचेत रहने के लिए 'स्वाइन-फलयु' के वेक्सिन, ५२५ मरीजों को विविध बीमारियों के लिए होमियोपैथिक औषधियाँ दी गयीं।

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा द्वारा नियमित पूजा; अगस्त १०, १५, २४ को चल-सत्संग; एक विशेष सत्संग पश्चात् सहभोजन; दिनांक २९ अगस्त को पादुका-पूजा; मासिक साधना-दिन १ अगस्त को; चिदानन्द-दिवस को कुष्ठरोगियों की एक संस्था के ४०० निवासियों को भोजन और मासिक आवश्यकतानुसार औषधियों का वितरण आदि सम्पन्न हुए।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने दैनिक पूजा, प्रति रविवार को पादुका-पूजा के साथ सत्संग के अतिरिक्त आदरणीय श्री स्वामी शरवणभवानन्द जी की अन्तिम विदा की दुःखद समाचार-प्राप्ति पश्चात् प्रार्थना-सभा; श्री गुरु-पूर्णिमा, आराधना-दिवस और परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को पादुका-पूजा सहित सत्संग आदि सम्पन्न किये। समाज-सेवा में दिनांक १२ अगस्त को नाड़ी-परीक्षा (pulse-diagnosis) कैम्प आयोजित किया गया।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियों में प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; एकादशी-सत्संग में स्तोत्रपाठ; संक्रान्ति-दिवस के सत्संग में श्री सुन्दरकाण्ड और श्री हनुमान-चालीसा के पाठ सम्पन्न करके, श्री गुरु-पूर्णिमा को पूर्वाह्न में पादुका-पूजा और हवन, पूजा और सायंकाल को प्रवचनों की सफल पूर्ति की।

भुज (गुजरात): श्री गुरु-पूर्णिमा को और आराधना-दिन को भक्ति-संगीत के साथ विशेष सत्संग एवं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को रुद्राभिषेक-यज्ञह्नह्नये शाखा के आयोजित कार्यक्रम थे।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा की दैनिक गतिविधियाँह्नह्नद्विवार पूजाएँ; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; दिनांक १० और २८ अगस्त को श्री सुन्दरकाण्ड, श्री हनुमान-चालीसा के पाठ पश्चात् सिख धर्मग्रन्थ का पाठ; शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को अनुक्रम से पादुका-पूजा और हवन। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्री गुरु-पूर्णिमा-आराधना-दिवस : पादुका-पूजा, प्रवचन, भजन-कीर्तन, आरती और प्रसाद-वितरण। (२) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। (३) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि : उनके उपदेशों पर विशेष प्रवचन, भजन-कीर्तन, अन्ध-जनों की और विकलांग छात्रों की शालाओं में भोजन, मिठाइयाँ, फल आदि का वितरण। समाज-सेवा दैनिक योगासन-वर्ग, शिवानन्द-पुस्तकालय और छात्रों को छात्र-वृत्तियों का प्रदान।

चण्डीगढ़ : परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि के कार्यक्रमों में, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपान्द जी महाराज की निश्रा में ३ दिवसीय सघन, साधना-शिविर, दिनांक २७, २८, २९ अगस्त को सम्पन्न हुई। चार भिन्न राज्यों के आठ भिन्न स्थानों से १५० भक्त प्रतिभागी हुए। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने, ''श्रीमद् भगवद्गीता-योग, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के साथ के उनके व्यक्तिगत अनुभव और उनके जीवन तथा उपदेश,'' विषयक प्रवचन दिया। उनके द्वारा मार्गदर्शित ध्यान, प्रश्नोत्तरी भी सब प्रतिभागियों को सुचारु रूप से सर्वोच्च सन्तोष देते हुए परिचालित हुए। ब्रह्मलीन स्वामी जी महाराज की दृश्य-श्राव्य के केसैट्स-दर्शन तथा उनके प्रवचनों पर आधारित (Bliss is thy Birthright) नाम की पुस्तिका का विमोचन हुआ। आदरणीय श्री स्वामी कैवल्यानन्द जी द्वारा पादुका-पूजा, ३०० निर्धनों को रविवार को भोजन-वितरण और ५० मरीजों के परीक्षण के बाद उन्हें औषधियों का वितरण और ''गन्धर्व महाविद्यालय'' के कलाकारों द्वारा भजन-प्रस्तुति आदि भी सम्पन्न हुए। दिनांक ३० अगस्त को, सरकारी कॉलेज में, 'योग का महत्त्व' विषयक प्रवचन तथा शाखा के योग-शिक्षक, श्री संदीप जी द्वारा योगासन का प्रत्यक्ष निर्देशन आदि अन्य कार्यक्रम थे। आदरणीय श्री राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी तथा आदरणीय श्रीमती सुधा माता जी ने भी कार्यक्रमों में उपस्थिति दी।

दिगपहंडी (उड़ीसा): शाखा ने रविवार तथा गुरुवार को इस प्रकार सप्ताह में द्विवार सत्संग, 'शिवानन्द-दिवस' तथा 'चिदानन्द-दिवस' को पादुका-पूजा के अतिरिक्त श्री गुरुपूर्णिमा-उत्सव में, पादुका-पूजा, गीता-पारायण, भजन-कीर्तन, आरती और प्रसाद एवं श्री गुरुपूर्णिमा से आराधना-दिवस पर्यन्त, १२ दिन तक विशेष सत्संग आयोजित हुए।

घाटपदमुर (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित

गतिविधियाँ॥दैनिक प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान-सभा और श्री रामायण-पाठ, स्तोत्रपाठ, पूजा, योगासन-वर्ग प्रभात में ही, दैनिक सायंकालीन आधा घण्टा संकीर्तन और सत्संग, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, शनिवार तथा रविवार को विविध स्तोत्र-पाठ। विशेष गतिविधियाँ॥ (१) श्री नाग पंचमी पूजा-अर्चना और संकीर्तन सहित, (२) श्रावण पूजा, प्रति सोमवार को शिव-अभिषेक, (३) ६ घण्टों का अखण्ड कीर्तन अन्तिम सोमवार तथा २३ अगस्त को, (४) रक्षा-बन्धन संकीर्तन सहित, (५) स्वातन्त्र्य-दिन उत्सव।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा की दैनिक त्रिवार पूजा-आरती, ब्राह्ममुहूर्तीय तथा प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान; योगासन-वर्ग; २ घण्टों का सान्ध्य-सत्संग के अतिरिक्त साप्ताहिक विविध, गतिविधियों में, गुरुवार को पादुका-पूजा, शुक्रवार, शनिवार और सोमवार के प्रतिष्ठित और इष्टदेव-देवियों के स्तोत्रपाठ आदि की सुचारु रूप से सम्पन्नता के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में (१) सब सोमवार को श्रावण-माह की पूजाएँ, (२) अखण्ड रामायण-पाठ, शिव-अभिषेक, हवन, भण्डारा अन्तिम सोमवार को, (३) स्वातन्त्र्य-दिन को ध्वज-वन्दन, (४) रक्षा-बन्धन का उत्सव।

हंसुरा (उड़ीसा): शाखा के श्री गुरु-पूर्णिमा और आराधना-दिन के ८ घण्टों के उत्सव॥ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान, निष्काम सेवा, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन पश्चात् प्रसाद-सेवन और प्रवचनोंयुक्त विशेष रात्रि-सत्संग, (२) उभय उत्सवों के मध्य ९ दिवसीय साधना-अवधि में भक्तों के निवास-स्थानों पर दैनिक चल-सत्संग।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँ॥दैनिक प्रभातीय श्रीमद् देवी-भागवत कथा तथा प्रति रविवार को प्रभातीय साप्ताहिक सत्संगों में हवन, स्वाध्याय; प्रति मंगलवार को और शनिवार को श्री हनुमान जी के स्तोत्रपाठ सायंकाल में, महामृत्युंजय जप प्रति गुरुवार को, सप्ताह के अन्य चार दिनों को स्तोत्रपाठ और स्वाध्याय सहित सत्संग; प्रति सोमवार मातृ-सत्संग, प्रति एकादशी को श्री सत्यनारायण पूजा-कथा। होमियोपैथिक औषधालय॥माह जुलाई २०१० में १४२६ मरीजों के इलाज की सम्पन्नता; ३०० निर्धनों-निराधारों को दैनिक अन्न-दान, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में अनाज-चीनी और अन्य वस्तुओं सहित कोरा राशन-वितरण, २६ विधवा महिलाओं को नियमित रोकड़े रुपयों के दान की सहाय; प्रतिमाह १०५ छात्रों को रु. २७,००० की छात्र-वृत्तियां; दैनिक योगासन-वर्ग और शिवान्द लाइब्रेरी। विशेष गतिविधियाँ॥(१) श्री गुरु-पूर्णिमा उत्सव : श्री सत्यनारायण पूजा-कथा, हवन, गुरु-पूजा, आरती-प्रसाद॥७० भक्त प्रतिभागियों की प्रतिभागिता। (२) पावन श्रावण माह : दैनिक पूजा, शिव-अभिषेक।

जयपुर (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति रविवार और गुरुवार को साप्ताहिक द्विवार सत्संग, 'शिवानन्द-दिवस' को प्रभातीय और सान्ध्य आध्यात्मिक कार्यक्रम के आधिक्य में, श्री गुरु-पूर्णिमा और आराधना-दिन को॥प्रातः ५ से ९ घण्टों के कार्यक्रमों में, प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, भजन, कीर्तन, प्रवचन, स्वाध्याय, ज्ञान-प्रसाद, आरती, सब प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन, ५० भक्तों के साथ सान्ध्य-विशेष-चल-सत्संग, ७० कॉलेज-विद्यार्थियों की प्रतिभागिता युक्त, 'स्वामी शिवानन्द जी का जीवन' विषयक स्पर्धा-परिचालन। दिनांक ८ अगस्त के 'साधना-दिन' को ५० भक्तों की प्रतिभागिता थी। दिनांक २९ जुलाई को चल-सत्संग सम्पन्न हुआ।

काकिनाडा, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा, शाखा में ही, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; अन्य एक केन्द्र पर भजन-कार्यक्रम, प्रति मंगलवार को और अन्य स्तोत्रों के पाठ, लक्ष्मी-अष्टोत्तरनामार्चना सफलतापूर्वक प्रति शुक्रवार को पूर्ण हुए। दिनांक १ अगस्त को एक आध्यात्मिक प्रवचन आयोजित हुआ। शाखा ने निर्धन छात्रों को रुपये ३०० की छात्र-वृत्ति और विकलांग छात्रों को मिठाई और बॉलपेन वितरित किये गये। दिनांक ८ और २२ अगस्त को होमियोपैथिक कैम्प रखे गये।

कंटाबाँझी (उड़ीसा): शाखा के सत्संग दिनांक १, ८, १५ अगस्त को भगवद्गीता और रामायण के स्वाध्याय युक्त सम्पन्न हुए।

खातिगुडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ॥दैनिक द्विवार पूजा, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, आधिक्य में एक चल-सत्संग, एकादशी-सत्संग और दिनांक ४ जुलाई को १२ घण्टों के अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन और नारायण-सेवा युक्त साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँ॥श्री गुरु-पूर्णिमा : ब्राह्ममुहूर्तीय ५ से प्रार्थना-ध्यान-सभा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप, पादुका-पूजन, भण्डारा-आयोजन और नारायण-सेवा। (२) श्रीमद् भागवत-सप्ताह : दिनांक २८ जुलाई से आरम्भित ७ दिवस पर्यन्त सम्पन्नता।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा ने दिनांक १ अगस्त को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण और ध्यान सहित साप्ताहिक सत्संग, दिनांक ८ अगस्त को ध्यान और भण्डारा, दिनांक १५ अगस्त को गुरुदेव की

पुस्तकों का स्वाध्याय, दिनांक २२ अगस्त को एक स्थानिक आदरणीय सन्त द्वारा प्रवचन और ज्ञान-प्रसाद वितरण तथा दिनांक २९ अगस्त को भजन-प्रस्तुति आदि पूर्ण किये। दिनांक २१ अगस्त को परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज का प्रवचन आयोजित हुआ।

पटना (बिहार): श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिवस को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकालीन विशेष सत्संग एवं दिनांक २७ जुलाई से दिनांक ३ अगस्त पर्यन्त साधना-सप्ताह का परिचालन शाखा द्वारा हुआ।

रहामा (उड़ीसा): शाखा ने पादुका-पूजा और सायंकालीन विशेष सत्संग श्री गुरु-पूर्णिमा तथा आराधना-दिवस को एवं 'साधना-सप्ताह' दिनांक २७ जुलाई से दिनांक ३ अगस्त को सम्पन्न किये।

राउरकेला (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ: ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, योगासन-वर्ग और पादुका-पूजा प्रभात में, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सान्ध्य-सत्संग, प्रति रविवार को साप्ताहिक चल-सत्संग में आध्यात्मिक प्रवचन, 'शिवानन्द-दिवस' तथा 'चिदानन्द-दिवस' को पादुका-पूजन और 'चिदानन्द-दिवस' को विशेष सान्ध्य-सत्संग।

विशेष गतिविधियाँ: श्री गुरु-पूर्णिमा : प्रभातफेरी, ध्यान, योगासन, पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी और तीन वरिष्ठ भक्तों द्वारा प्रवचन, सब भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन, अनाथालय के ५० बालकों को नारायण-सेवा तथा सान्ध्य-सत्संग। गुरुदेव के संन्यास दीक्षा-दिवस १ जून को प्रभातीय पादुका-पूजन और गुरुदेव के जीवन विषयक दो प्रवचनों सहित सान्ध्य-सत्संग। (३) शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा प्रति रविवार को ५१ मरीजों के इलाज आदि की सम्पन्नता हुई।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा की दैनिक गतिविधियाँ: दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति रविवार को 'चिदानन्द-बाल-विकास', 'शिवानन्द-दिवस' और 'चिदानन्द-दिवस' को प्रभातीय पादुका-पूजन और विशेष सान्ध्य-सत्संग, संक्रान्ति-दिन को ३ घण्टे का महामन्त्र-कीर्तन। विशेष कार्यक्रम : दिनांक २६ जुलाई से दिनांक ३ अगस्त पर्यन्त साधना-सप्ताह : ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान-सभा, प्रभातीय योगासन-वर्ग और सांध्य-सत्संग। आराधना-दिवस : प्रातः ४-३० से प्रातः ६-३० पर्यन्त : प्रभातफेरी, प्रार्थना-ध्यान के पश्चात् पादुका-पूजा, सत्संग और प्रवचन, अन्न-प्रसाद और ७५ निराधारों को रोकड़ी दक्षिणा का दान और ४०० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन। संध्या को विडियो कैसेट द्वारा श्री गुरुदेव-दर्शन। दिनांक २८ अगस्त को ३ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन।

सालेपुर (उड़ीसा): दैनिक प्रभातीय पूजा और स्तोत्रपाठ, दैनिक सान्ध्य-सत्सग, दैनिक योगासन, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, दिनांक ४ जुलाई को गीता-पारायण, दिनांक १८ जुलाई को साधना-दिन, दिनांक १० जुलाई को श्री सुन्दकाण्ड-पारायण, 'शिवानन्द-दिवस' को पादुका-पूजन, हरएक, वार-दिवस के प्रतिष्ठित इष्टदेवता के दैनिक पाठ तथा ५१ मरीजों के निःशुल्क मेडिकल इलाज। विशेष गतिविधियाँ: (१) श्री गुरु-पूर्णिमा : पादुका-पूजा और विशेष सत्संग, (२) अखण्ड जप : महामन्त्र का, दिनांक ३१ जुलाई को ६ घण्टों पर्यन्त। (३) ६४ छात्रों को योग-प्रशिक्षण।

शेरगढ़ (उड़ीसा): साप्ताहिक सत्संग एक विशेष सत्संग और नारायण-सेवा का परिचालन शाखा द्वारा हुआ। होमियोपैथिक औषधालय की सेवा का सातत्य रहा।

सुनाबेडा (उड़ीसा): साप्ताहिक द्विवार सत्संग प्रति गुरुवार और रविवार को दिव्य जीवन संघ की पुस्तकों के स्वाध्याय के साथ सम्पन्न होते हैं। श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा, हवन, पूजा-आरती, भजन-कीर्तन एवं ''श्री गुरु-तत्त्व साधना'' कार्यक्रम दिनांक २९ जुलाई से ४ अगस्त पर्यन्त जिसमें पूजा-आरती, विशेष सत्संग, भजन-कीर्तन आदि के आयोजन हुए।

बडोदरा (गुजरात): शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति रविवार को 'ईशावास्य उपनिषद्' का अध्ययन विशेष मण्डली के विचार-परामर्श: आदान-प्रदान द्वारा सम्पन्न हुए। 'शिवानन्द-दिवस', 'चिदानन्द-दिवस' को पादुका-पूजा और मन्त्र-जप, श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजन और भगवान् श्री दत्तात्रेय विषयक ५ दिवसोंपर्यन्त प्रवचन आयोजित हुए।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दिनांक ८ अगस्त और दिनांक २२ अगस्त को पाक्षिक सत्संग पूर्ण किये।

वरंगल (आन्ध्र प्रदेश): 'आराधना-दिन' को शाखा ने विशेष सत्संग, पादुका-पूजा, संकीर्तन, प्रवचन और प्रसाद-वितरण सुचार रूप से सम्पन्न किये।

* * *

भारतीय विद्या भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ २०१०

पाठकों को सूचित किया जाता है कि भारतीय विद्या भवन अन्य प्रतियोगिताओं के साथ-साथ **श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज** की स्मृति में एक वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इसका विवरण इस प्रकार है :

भवन की श्री स्वामी शिवानन्द स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता २०१०

विषयह्नह्न**वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता**

आयु-सीमाह्नह्न२० से ३० वर्ष ; पुरस्कारह्नह्न रु.१०००, रु.७००, रु.३००

माध्यमह्नह्न**हिन्दी**

आवेदन-पत्र की अन्तिम तिथिह्नह्न**३१ जनवरी २०११**

आवश्यक शर्तें

१. सीमा : २००० शब्द। निबन्ध की दो टाइप की हुई प्रतियाँ।

२. भाग लेने वाले प्रतियोगी का पूरा नाम, घर का पता, आयु का प्रमाण-पत्र, फोटो (छोटी), दूरभाष नं./फैक्स नं./ई-मेल पता।

३. पुरस्कार-विजेता आगामी तीन वर्षों तक इस प्रतियोगिता में पुनः भाग नहीं ले सकता।

४. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा।

५. पत्र-व्यवहार के लिए पताह्नह्नप्रो. एस. ए. उपाध्याय, प्रोजेक्ट अधिकारी, भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ, भारतीय विद्या भवन, कुलपति मुंशी मार्ग, चौपाटी, मुम्बईह्नह्न४०० ००७

E-mail: bhavan@bhavans.info web-site: http://www.bhavans.info

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

o

३७ वाँ अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी का आध्यात्मिक सम्मेलन

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से ३७ वाँ अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी सम्मेलन २३ से २५ जनवरी २०११ को अन्नपूर्णा गार्डनज़, हंटर रोड, वरंगल, आन्ध्र प्रदेश में होगा। इस दिव्य जीवन सम्मेलन में मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं के विद्वज्जन पधारेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के उद्देश्य को ले कर किये जाने वाले इस सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के भक्त सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि-शुल्क रु. ११६/- (भोजन एवं आवासीय सुविधा सहित) रखा गया है, जिसे कृपया डिमांड ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर द्वारा 'अध्यक्ष, डी. एल. एस. सम्मेलन, # ६-२-१२० जी. आर. कॉम्प्लेक्स, काकाजी कालोनी, हनामकोंडा, वरंगल : ५०६००१. ई-मेल : dls.warangal@gmail.com पर भेजें।

सम्पर्क-सूत्र : १. श्री के. रामेश्वरह्नह्न९९६६३०२९४८ (सचिव); २. श्री एस. मार्कण्डेयह्नह्न९३४६९२७१६१ (कोषाध्यक्ष); ३. श्री ए. वी. समीर कुमारह्नह्न९२४६८९०९९९ (समन्वयकारह्नकोआर्डिनेटर)

सभी भक्तों से निवेदन है कि इस सम्मेलन में भाग ले कर इसे सफल बनायें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

ॐ

दिव्य चैतन्य सदा विद्यमान, नित्य मुक्त, सदैव परिपूर्ण और अविच्छिन्न है। आप वास्तव में वही हैं! अपने जीवन के प्रत्येक पग पर और हर एक श्वास के साथ प्रसन्नता और उत्साहपूर्वक इस जागरूकता के प्रकाश में जियें। भले ही कितनी भी सघन बादलों की परत से ढक क्यों न जाये, सूर्य अपने उज्जवल प्रकाश सहित सदैव विद्यमान ही है। आप भी इसी प्रकार सदैव देदीप्यमान हों। ह्रह्मस्वामी चिदानन्द

आश्रम मुख्यालय में विद्यार्थियों का तीनदिवसीय आध्यात्मिक शिविर

सद्गुरुदेव के दिव्य मिशन द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृतमहोत्सव के पावन अवसर के एक अंग के रूप में आश्रम मुख्यालय में १ से ३ अक्तूबर तक विद्यार्थियों का तीन-दिवसीय आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया गया। इसमें ऋषिकेश के १२ विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ९२ विद्यार्थियों तथा उनके साथ १७ अध्यापकों ने भाग लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन में किया गया था।

१ अक्तूबर को कार्यक्रम का शुभारम्भ, जयगणेश प्रार्थना तथा उसके उपरान्त मुख्यालय डी. एल. एस. के उपाध्यक्ष एवं शिविर के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज के स्वागत भाषण एवं आशीर्वचनों सहित हुआ। इसके साथ ही डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दीपक प्रज्वलित करते हुए शिविर का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया।

शिविर के प्रत्येक दिवस में दो सत्रों का समावेश किया गया था। श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज पूर्वाह्न सत्र के विधिनायक (मास्टर ऑफ सेरेमनीज) रहे तथा उपराह्न सत्र के विधिनायक के रूप में समारोह का संचालन श्री प्रोफेसर राजेन्द्र भारद्वाज जी ने किया। शिविर की समस्त गतिविधियों का संचालन इस दृष्टिकोण से किया गया था कि उसके द्वारा विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ उनके जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का भी समावेश हो।

शिविर के तीनों दिन पूर्वाह्न का प्रारम्भ श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा योगासन और प्राणायाम की कक्षाओं के संचालन से किया गया। इन्हें सीखने में विद्यार्थियों ने अत्यधिक उत्साह एवं रुचि दिखाई। इसके उपरान्त श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज द्वारा मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कहानी सुनाने का सत्र हुआ इसके बाद शिविर के प्रथम एवं अन्तिम दिन के सत्र में श्री प्रोफेसर राजेन्द्र भारद्वाज जी ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उदात्त जीवन-चरित तथा विश्व-प्रार्थना से सम्बन्धित प्रेणास्पद प्रवचन दिये। शिविर के द्वितीय दिवस परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने समन्वय योग पर प्रकाश डालते हुए उद्बोधन दिया। श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने तीनों दिन पूर्वाह्न सत्र में अपने प्रेरणास्पद प्रवचनों में श्रीमद्भगवद्गीता के महान् सत्यों पर विस्तृत व्याख्या की। पूर्वाह्न सत्र में प्रोफेसर आई. डी जोशी जी, डा. सुनील थपलियाल जी तथा श्री रामकृष्ण पोखरियाल जी के निर्देशन में की गयी एकाउटिंग तथा खेलों की गतिविधियाँ भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं मनोरंजक कार्यक्रम रहे।

अपराह्न सत्र, प्रतिदिन विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत भजन, कहानियों, पहेलियों और उच्चस्तरीय चुटकलों से हुआ। इस विलक्षण कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों में अन्तरनिहित योग्यताओं एवं क्षमताओं की अभिव्यक्ति हुई। इसके तुरन्त बाद श्री स्वामी योगवेदानन्तानन्द जी महाराज द्वारा आत्मसंवर्धन सैल्फकल्चरल) तथा ध्यान सम्बन्धी निर्देशन विषयों पर श्रृंखलाबद्ध प्रवचन दिये गये। श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने योगनिद्रा द्वारा तनावमुक्ति की कला का भी विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दिये। इस दोनों प्रश्नोत्तर सत्रों में विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साह पूर्वक सराहनीय प्रश्न पूछे। श्री स्वामी यतिधर्मानन्द जी द्वारा प्रदर्शित जादू के खेल ने विद्यार्थियों का अत्यन्त मनोरंजन किया। शिविर के अन्तिम दिन डी. एल. एस. मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा चार 'वीडियोक्लिपिंग' (बीडियो के अंश) दिखाए गये जिनमें प्रेरक सन्देश निहित थे। विद्यार्थियों ने उन निहितार्थों को अभिव्यक्त करना था। इस प्रेरणास्पद सत्र में विद्यार्थियों द्वारा इस आध्यात्मिक शिविर के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये गये।

समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद दिये प्रमाण पत्र तथा ज्ञान-प्रसाद वितरण के साथ ही कार्यक्रम समाप्त हुआ।

माँ गंगा के पावन तट पर, सदुरुदेव की पुण्यस्थली पर आयोजित किये गये इस आध्यात्मिक शिवर का एक एंग बनने वाले सभी विद्यार्थियो ने स्वयं को आशीर्वादित एवं धन्य अनुभव किया।

सद्गुदेव तथा परम पिता परमात्मा की कृपावृष्टि सब पर हो!